Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

हवेली संगीत

निधि श्रीवास्तव[9]

हवेली संगीत के अध्ययन हेतु सर्वप्रथम हवेली शब्द का अर्थ समझना अतिआवश्यक है। हवेली पारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है घर। बल्लभ सम्प्रदाय के भक्ति भवनों को यह संज्ञा दी जाती है (कर्णिका तोमर के अनुसार)। बल्लभ सम्प्रदाय का साधना पक्ष पुष्टिमार्गी संगीत कहलाता है। मार्ग का अर्थ है, ऐसा पथ जिस पर अग्रसरित होकर मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके तथा पुष्टि का अर्थ है, भगवान का अनुग्रह, अनुकम्पा तथा कृपा और पुष्टि का साधन है भक्ति और यह भक्ति, भक्त वत्सल भगवान के अनुग्रह से ही साध्य है अर्थात पुष्टिमार्गी संगीत का अर्थ है ऐसा संगीत जिसके माध्यम से भक्त भगवान को प्राप्त कर अपने जीवन के लक्ष्य को पूर्ण कर सके।

इन हवेलियों में राधा कृष्ण की राग (संगीत) एवं (भोग भोज्य पदार्थ) से सेवा की जाती है। ये हवेलियां श्री बल्लभाचार्य के वंशधरों के पारम्परिक घर हैं। इस सम्प्रदाय में भगवान श्री कृष्ण को स्वामी, सखा, बालक, प्रियतम तथा परम रसिक माना जाता है। हवेली संगीत की ध्रुपद तथा धमार परम्परा श्री हरि के अलौकिक रस को अनुभव करने का साधन है।

हवेली संगीत की परम्परा में स्वर, राग, ताल तथा पद को समान महत्व दिया जाता है। हवेली संगीत में राग तथा पद के गायन के समय का विशेष ध्यान रखा जाता है। जैसे– राग मालकौंश में और राग ललित में एक प्रकार की उष्णता है इसलिए इन्हें शीतकाल में प्रातःकाल की ठंड के समय में गाया जाता है। इसी प्रकार से ग्रीष्म की दोपहर में श्री राधा कृष्ण को ठण्डक पहुंचाने के लिए नूरसारंग जैसे शीतप्रद राग प्रस्तुत किए जाते हैं। सामान्यतः इस प्रकार के गायन को लीला कीर्तन कहा जाता है। हवेली संगीत के पदों में श्री राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन रहता है। सूरदास, परमानन्ददास, नन्ददास आदि अष्टछाप के कवियों एवं हित हरिवंश स्वामी हरिदास जैसे अनन्य भक्त कवियों के पद हवेली संगीत के संग्रह में हैं। हवेली संगीत के अन्तर्गत गाये जाने वाले पदों को दो भागों में विभाजित किया गया है–

1. नित्य अर्थात दैनिक जीवन से सम्बन्धित पद।
2. नैमित्तिक अर्थात पर्व त्यौहारों से सम्बन्धित तथा लीला सम्बन्धित पद।

[9] शोध छात्रा, (जे०आर०एफ०), संगीतशास्त्र विभाग, संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

हवेली संगीत की परम्परा में लीला स्मरण ही उद्देश्य रहता है। इसलिए इस परम्परा में गेय पदों का विशेष महत्व रहता है। इन पदों में श्रीकृष्ण की लीलाओं को कई प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। जैसे– कलेवा, राजभोग (मध्यान भोजन), वन में चारण, ग्वालबाल गायों के साथ क्रीड़ा इत्यादि अनेक वर्ग हैं। अधिकांश ध्रुपद के पद गोपियों व श्रीकृष्ण के बीच प्रेम लीला से जुड़े हैं। लीला गान के समय श्रीकृष्ण की समस्त लीला प्रत्यक्ष रूप से होती है। हवेली संगीत यज्ञ के तुल्य है। इसमें लीला गायन सामवेद के गायन के सदृश है। यहां वृन्दावन की गोपियों को भक्ति रस के परम गुरू के समान माना गया है। हवेली संगीत के अधिकांश पद उन्हीं के कण्ठों द्वारा गाए गए हैं। भक्ति रस प्रमुख रूप से चार हैं–दास, संख्य, वात्सल्य, श्रृंगार। अतः भक्ति के इन सभी प्रकारों के द्वारा हवेली संगीत में अनेक पद गाए जाते हैं। यह सर्वविदित है कि भगवान के लिए भाव ही प्रधान है स्वर या ताल साधना नहीं। इस विषय को स्पष्ट करने के लिए एक कथा बहुत प्रचलित है कि एक शाम जब श्रीनाथ जी के मन्दिर को बन्द कर दिया गया था और सिद्ध गायक गोविन्द स्वामी जी मंदिर से जा रहे थे तब उनके कान में दरबान के असंस्कृत कंठ की ध्वनि सुनाई पड़ी। गोविन्द स्वामी जी ने लौटकर उनसे कहा कि "इस तरह से मत गाओ"। महान गायक की आज्ञा का दरबान ने पालन किया और चुप हो गया। अगले दिन प्रातःकाल जब विठ्ठलनाथजी मंदिर में पहुंचे तो उन्होंने श्रीनाथ जी(भगवान) के लाल नेत्रों को देखकर उनसे पूछा हे भगवान आपको क्या हुआ ? तब श्रीनाथ जी ने उत्तर दिया कि कल शाम को गोविन्द स्वामी ने दरबान को गाने से रोक दिया और मुझे उसका गाना सुने बिना नींद नहीं आती। गोविन्द स्वामी ली को ठाकुर जी के इस प्रसंग की सूचना दी गई। इस कथा से स्पष्ट है कि भगवान के भावना ही सर्वोच्च स्थान रखती है अन्य कोई भी वस्तु नहीं।

हवेली संगीत को अष्टयाम में बांटा गया है। इसे इस प्रकार से स्पष्ट किया जाता है मंगला में श्री कृष्ण को जगाया जाता है, श्रृंगार में उनका श्रृंगार किया जाता है, ग्वाला में ग्वाल बाल के रूप में उनकी पूजा की होती है, राजभोग में दिन का भोजन होता है, इसके पश्चात विश्राम तथा फिर उत्थान, फिर भोग लगाया जाता है, इस भोग में वन्य फल अर्पित किए जाते हैं और संध्या के समय गाय बछड़ों के साथ वन से आगमन होता है तथा शयन अन्तिम भाग में आता है इससे पूर्व रात्री का भोजन अर्पित किया जाता है। इन सभी यामों में वात्सल्य तथा मधुर दोनों भावों के पद मिलते हैं। हवेली संगीत में श्री कृष्ण के सुख का इतना ध्यान रखा जाता है कि प्रातःकाल श्रृंगार से पहले मृदंग नहीं बजाया जाता। क्योंकि उन्हें धीरे से जगाना होता है। एक पद का उदाहरण इस प्रकार से है– मंगला का पद (राग भैरव) ताल– आड़ाचारताल

जागिए बृजराज कुंवर कमल कोष फूले
कुमुदनीय जीय सकुच रहीं भृंग लता झूले।
तमचर खग करत रोर बोलत बनराई
रम्भत गौ मधुर नाद बच चपल ताई।
रवि प्रकाश विधुमालन गावत ब्रजनाथ

सूर श्री गोपाल उठे परममंगल कारी।।

उपर्युक्त पद सूरदास जी द्वारा रचित है अष्टछाप के कवियों में मुख्य रूप से श्री सूरदास श्री कुम्भनदास परमानंददास कृष्णदास नन्ददास चतुर्भुज स्वामी छिट स्वामी प्रमुख हैं। इनमें से प्रथम चार नें बल्लभाचार्य जी से शिक्षा ली तथा अन्य नें इनके सुपुत्र से शिक्षा ग्रहण की। कीर्तन में प्रयुक्त सभी गायकी अंग को इस सम्प्रदाय में स्थान दिया गया ।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि हवेली संगीत में मुख्यतः भक्ति परक पदों का समावेश है। हवेली संगीत के ध्रुपद–धमार पदों में श्रीकृष्ण के नाम रूप गुण लीला का ही गान होता है। लीला नृत्य है परन्तु फिर भी वह भक्त के अतःकरण में किसी भी रूप में प्रकट हो सकती है। हवेली की संगीत परम्परा के देवता परमरसिक माने जाते हैं। गुजरात, बंगाल, मथुरा आदि स्थानों में हवेली संगीत का प्रयोग होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. ध्रुपद वार्षिकी– 1991
2. विभिन्न लेखों से सन्दर्भित